पूर्व की ओर

वृन्दावनलाल वर्मा

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक :
सत्यदेव वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०
मयूर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, झाँसी

ग्यारहवाँ संस्करण—१९६६
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
मूल्य—२ रुपया २५ पैसे मात्र

मुद्रक :
रामसेवक खड्ग
स्वाधीन प्रेस, झाँसी

नाटक के पात्र

वीरवर्म्मा – धान्यकटक का राजा – उपाधि पल्लवेन्द्र ।

अश्वतुङ्ग – वीरवर्म्मा का भतीजा ।

गजमद—अश्वतुङ्ग का साथी, विदूषक ।

आर्यस्थविर—नागार्जुनी कोण्डा (श्रीपर्वत) के एक विहार का तान्त्रिक बौद्ध भिक्षु ।

चन्द्रस्वामी—श्रेष्ठी और व्यापारी, प्रतिष्ठान प्रदेश का निवासी और जलयान का स्वामी ।

अवन्तिसेन—महानाविक – जलपोत का सञ्चालक ।

कन्दर्पकेतु – धान्यकटक का एक धनाढ्य व्यापारी ।

जिष्णु – मगध का एक निर्वासित नागरिक जो नागद्वीप में रहने लगा था ।

धारा – जिष्णु की पुत्री ।

तुम्बी – नाग-द्वीप की स्त्री ।

गौतमी—कन्दर्पकेतु की पुत्री ।

मन्त्री, भट्टनागर, दण्डनायक, नाविक, मांझी, द्वारपाल, योद्धा, नागद्वीप के निवासी, वारुणद्वीप के निवासी, नागद्वीप वासिनी स्त्रियाँ इत्यादि ।

स्थान—धान्यकटक, नागार्जुनी कोण्डा, प्रतिष्ठान और नागद्वीप तथा वारुणद्वीप ।

समय—तीसरी शताब्दि के अन्त के लगभग ।

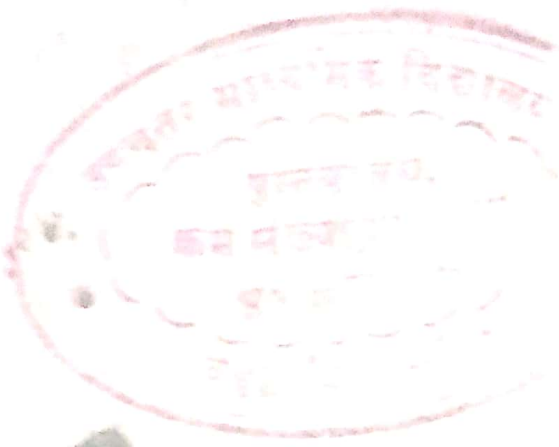

Scanned with OKEN Scanner